पद ३

(राग: जोगिया - ताल: धुमाळी)

आता जाऊं चला आम्हीं पाहूं चला। गुरुराज प्रगट प्रभुराज प्रगट अवधूत आला। बोलुं चला आणि प्रार्थु चलेश हा निर्विकल्प सिवकल्पीं आला।।धु.।। घेति पत्र पुष्प फल जल गंध मणि मोती। आणि नटुनि म्हणति आता वाहूं चला। शीघ्र चला अति शीघ्र चला। हा निर्विकल्प सिव कल्पीं आला।।१।। कोणि हार तुरा

मौक्तिक गजरा। रत्नकटक मुगुट शिरिं घालूं चला। मागूं चला धन पुत्र सुख। हा निर्विकल्प सविकल्पीं आला।।२।। कोणि मागे गुजमंत्र योग ध्यान ज्ञान तंत्र। नको जन्म परतंत्र पदीं रमूं चला।।३।

मौक्तिक गजरा। रत्नकटक मुगुट शिरिं घालूं चला। मागूं चला धन पुत्र सुख। हा निर्विकल्प सिवकल्पीं आला॥२॥ कोणि मागे गुजमंत्र योग ध्यान ज्ञान तंत्र। नको जन्म परतंत्र पदीं रमूं चला॥३)

सविकल्पी आला। धु.॥ घेति पत्र पुष्प फल जल गंध मणि मोती। आणि नटुनि म्हणति आता वाहूं चला। शीघ्र चला अति शीघ्र चला। हा निर्विकल्प सवि कल्पीं आला॥१॥ कोणि हार तुरा